द्विमासिक समाचार पत्रिका

ई-समाचार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर

अंक - 09 जनवरी-फरवरी वर्ष-2016

नव वर्ष का संदेश

मैं, संस्थान के सभी हितधारकों, सकाय सदस्यों, स्टाफ सदस्यों के स्वस्थ, शांतिमय एवं समृद्धशील नव वर्ष के लिए शुभकामनाएं देता हूँ। नव वर्ष के प्रारंभ के साथ, हम अपने आगामी कल के लिए नई योजनाएं, आशाएं एवं अभिलाषाएं तैयार करते हैं और उसके सफल क्रियान्वयन की कामना करते है।

संस्थान में, हम स्टाफ सदस्य विशेषतः संकाय सदस्य उचित शिक्षा के माध्यम से छात्रों को उनके विषय क्षेत्र में सशक्त बनाने में सहायता कर सकते हैं, और उन्हें उनके ज्ञान की सीमा की लीक से हटकर कुछ अनोखा करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

हमें यह याद रखना होगा कि, हम संस्थान में समग्र शिक्षा का वातावरण, नवप्रवर्तन संस्कृति की प्रक्रिया एवं महान व्यक्तित्व की प्रतिबद्धता को कायम रखने के लिए निरंतर प्रत्यनशील रहे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे छात्र इस अवसर का लाभ उठाएंगे और समाज तथा राष्ट्र को सुशोभित एवं सुदृढ़ बनाने हेतु अपना बहुमूल्य योगदान देंगे।

विज़ेनियर – 2016

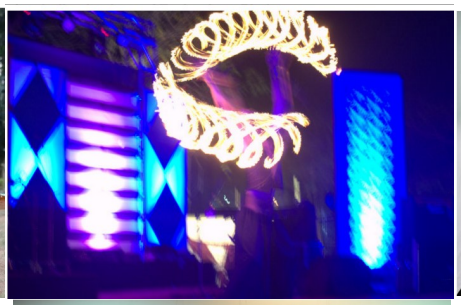

विज़ेनियर 2016 का उद्घाटन दिनांक 08 जनवरी 2016 को किया गया। कार्यक्रम के उद्घाटन समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में प्रदीप फॉस्फेट लिमिटेड के निदेशक श्री डी.एस. रवींद्र राजू उपस्थित थे। कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। कार्यक्रम में निदेशक, उपनिदेशक, संकायाध्यक्ष (छात्र कार्य), उपाध्यक्ष, (छात्र जिमखाना) ने अपने संबोधन में विज़ेनियर 2016 के सफल आयोजन के लिए कामना की।

श्री रवींद्र राजू ने अपने संबोधन में नवप्रवर्तन के महत्व पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाला और भविष्य के मनुष्यतत्व को एक सही दिशा देने में आभासीकरण के निर्णायक की भूमिका पर चर्चा की। इसके साथ ही उन्होंने अपने संबोधन में छात्रों के समक्ष स्टीव जॉब्स के महत्वपूर्ण विचारों को साँझा किया और विज़ेनियर के माध्यम से अन्य आकर्षक गतिविधियों के आयोजन के लिए प्रोत्साहित किया।

संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने अपने संबोधन में छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए अतिरिक्त गैर-शैक्षणिक गतिविधियों के आयोजन पर बल दिया और आशा व्यक्त की आगामी विज़ेनियर उत्सव का आयोजन संस्थान के स्थाई परिसर अरगुल में किया जाएगा।

उद्घाटन समारोह की संध्या में शिल्पकार ऋषिकेष पोतदार ने पेपर कटिंग कला के माध्यम से अत्यंत आकर्षक प्रस्तुति प्रस्तुत की। इसी दौरान उपस्थित सुमरित साही, सर्वश्रेष्ठ विक्रेता युवा लेखक ने उपस्थित जनसमूह को अपने स्वप्नों को साकार करने के लिए उत्साह से परिपूर्ण एक व्याख्यान प्रस्तुत किया और उपस्थित छात्रों को अपने-अपने स्वप्न को साकार करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

कार्यक्रम का दूसरा दिन अत्यंत व्यस्तम रहा इस दौरान प्लेथोरा कार्यक्रम के अधीन, कोलिक्यू, रोबोवार्स, उडान, फिनेंजा एवं अन्य टेक्नो-मैनेजेरियल कार्यक्रम के साथ प्रदर्शनी भी आयोजित की गई। श्री दिवाकरवैश, भारत के प्रथम 3डी प्रिंटेड ह्युमनाइड एवं अन्य नवप्रर्तन प्रौद्योगिकियों के साथ भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर द्वारा पहला एअर प्रदर्शन का आयोजन किया गया। सांध्य कार्यक्रम का आयोजन प्रतिभागियों में काफी आकर्षण रहा, वर्ष 2013 की 100 फॉर्बस सूची में निरंतर अपने नाम को अंकित करती आई भारत की सबसे पहली सर्वश्रेष्ठ विक्रेता लेखिका प्रीति शैणॉय ने अपने व्याख्यान से सभी को आकर्षित किया। पूर्वी भारत के प्रसिद्ध हास्यपदकार अज़ीम बनतवाला, अंगद सिंह एवं स्पान वर्मा ने वर्तमान के सभी मुद्दों पर विनोदपूर्ण हास्य व्यंग्य प्रस्तुत कर सभी को आनंददित किया।

कार्यक्रम के तीसरे दिन बीज़ क्विज़ एवं टेक क्विज़ का आयोजन किया गया। इसरो के अध्यक्ष श्री ए.एस.किरण ने वेबिनार द्वारा विज़ेनियर 16 को संबोधित किया। कार्यक्रम का अंतिम प्रदर्शन मैग्ना विस्टा था, जिसमें लगभग हजारों की संख्या में दर्शक उपस्थित थे। इसी के एक भाग के रूप में, फायर एवं एलईडी एक्ट और मुर्रे मॉल्ली की तलवार बाजी कला ने अपने प्रदर्शन से दर्शकों के रोंगटे खड़े कर दिए। कार्यक्रम का समापन मोहम्मद इरफान ('बंजारा-एक विलन' फेम) के बैंड के प्रदर्शन से हुआ। उनके प्रदर्शन ने उपस्थित श्रोताओं को बार-बार "वन्स मोर" कहने पर मजबूर किया। विज़ेनियर 16 के इस नए रूप कार्यक्रम में अनेक विद्वानों, नवप्रर्वतकों के व्याख्यानों और मेगा शो न केवल श्रोताओं एवं दर्शकों का ध्यानाकर्षित किया बल्कि उन्हें मंत्रमुग्ध किया और पूर्व भारत के सर्वश्रेष्ठ कार्यक्रमों में अपनी पहचान को बनाए रखने में सफल रहा।

संपादकीय....

ई-समाचार का 09 वाँ अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। नव वर्ष का आगमन हमारे जीवन को नई अनुभूतियों, नई अभिलाषाएं, नए स्वप्न के साथ एक नई दिशा प्रदान करता है। पूर्व वर्ष की समाप्ति तथा नव वर्ष के आगमन के साथ हमें कुछ अनुभव प्राप्त होते है। पूर्व वर्ष में हुई गलतियाँ हमें आगामी वर्ष की योजनाओं को पूर्ण करने में और सक्षम बनाते है। नव वर्ष हमारे जीवन में नई खुशियों का आगाज़ करता है। यह वर्ष संस्थान के लिए कई मायनों में उपलब्धि हासिल करने वाला है जिसमें संस्थान का मुख्य लक्ष्य इस वर्ष की समाप्ति तक संपूर्ण रूप से अपने स्थाई परिसर से कार्य प्रारंभ करना होगा।

इस अंक में संस्थान निदेशक के नववर्ष संदेश के साथ, संस्थान की तकनीकी एवं सामाजिक सांस्कृतिक उत्सवों से संबंधित खबरों को प्रकाशित किया है। यह उत्सव संस्थान छात्रों की बौद्धिक क्षमता तथा सांस्कृतिक प्रियता को प्रदर्शित करता है। इसके साथ ही इस अंक में हमने संस्थान निदेशक की अध्यक्षता में आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 58 वीं बैठक के आयोजन के साथ संस्थान की संघ की राजभाषा की प्रतिबद्धता को भी दर्शाया है।

इस अंक में हमने अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम से संबंधित गतिविधियों को भी एकत्रित किया है। इस अंक में हमने सर सी.वी.रमन के खोज़ के सम्मान में आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के आयोजन से संबंधित खबरों को भी प्रकाशित किया है। इस अंक में हमने साहित्य मंच के अधीन प्रेमचंदोत्तर लेखक श्री जैनेंद्र कुमार के जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण पहलुओं को प्रकाशित कर अपने पाठकों का ज्ञानवर्धन करने का प्रयास किया है। - **नितिन जैन**

अलमा फिस्टा – 16

संस्थान का सामाजिक एवं सांस्कृतिक उत्सव "अलमा फिस्टा-16" शहर के प्रमुख कार्यक्रमों में से एक है। इस उत्सव का आयोजन 15-17 जनवरी 2016 के दौरान किया गया। इस वर्ष उत्सव का विषय "क्वेस्ट इन वाइलडरनेस" था।

कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह 15 जनवरी 2016 को किया गया जिसमें संस्थान निदेशक, प्रो. आर.वी. राज कुमार, डॉ. शुभांकर पति, अध्यक्ष, अल्मा फिस्टा के साथ संस्थान के सभी प्रतिष्ठित संकाय सदस्य उपस्थित थे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में प्रसिद्ध रेत कलाकार पद्मश्री श्री सुदर्शन पट्टनायक उपस्थित थे।

हमारे राष्ट्र की समृद्ध सांस्कृतिक परंपरा शास्त्रीय संगीत में काला रामनाथ ने "सिंगगिंग वाइलिन" कार्यक्रम प्रस्तुत किया। इस कार्यक्रम में देश के सुप्रसिद्ध तबला वादक अभिजीत ने अपनी प्रस्तुति से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पहले दिन का कार्यक्रम का समापन स्पिक मैके समूह के गोटिपुआ नृत्य के साथ हुआ।

उत्सव के दूसरे दिन, देश के प्रतिष्ठित कॉलेजों से आए प्रतिभागियों के लिए समर्पित था। इस दौरान उनके लिए नृत्य, नाटक, गीत एवं ललित कला आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। दूसरे दिन के कार्यक्रम का समापन बॉलिवुड इडीएम के कलाकार निखिल साहानी ए.के.ए (डीजे नाइक) की प्रस्तुति से हुआ। उन्होंने अपनी प्रस्तुति एवं कला से उपस्थित जनसमूह को आकर्षित किया।

इस तीन दिवसीय उत्सव का समापन गायक निखिल डि-सुजा के गायन के साथ हुआ जिन्होंने अपनी गायकी से सभी को अपने-अपने पैरों पर थिरकने के लिए मजबूर कर दिया।

इस उत्सव में देश के 30 कॉलजों से लगभग 2000 छात्रों ने भाग लिया जिन्होंने 50 से अधिक प्रतियोगिता जैसे संगीत, नृत्य, नाटक, अक्षरशः, ललित कला में अपनी सहभागिता दर्ज की। इसके अतिरिक्त इसमें कई कार्यशालाएं जैसे सलसा, एंडड्राइड एप्प डेवल्पमेंट, पेपर क्वेलिंग, क्ले मॉडलिंग एवं फोटोग्राफी आदि शामिल थे।

बीएसआई 2016

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की टीम नॉकनसोनिएक्स ने यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ के 09 अवर स्नातक छात्रों के साथ डॉ. अरुण कुमार प्रधान एवं डॉ. मिहिर कुमार दास के नेतृत्व में बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट, नोयडा में दिनांक 21 जनवरी 2016 से 26 जनवरी तक आयोजित बीएजीए छात्र इंडिया 2016 में भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में लगभग 90 टीमों ने भाग लिया जिसमें अन्य भा.प्रौ.संस्थानों जैसे, कानपुर, बीएचयू एवं हैदराबाद भी शामिल थे। इस प्रतियोगिता में संस्थान ने दसवां स्थान प्राप्त किया और सभी भा.प्रौ.संस्थानों में से पहली टीम बनी जिसने बिना किसी व्यवधान के ही प्रतियोगिता पूरी की। इसने बाईस लैप को निर्धारित समय में ही पूर कर लिया था।

सम्मान

श्री सत्यनारायण धल एवं श्यामल चटर्जी को इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियर्स (भारत)-2016 द्वारा गणेश मित्र स्मारक पुरस्कार प्रदान किया गया।

गणतंत्र दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने अपने स्थाई परिसर अरगुल में 67वाँ गणतंत्र दिवस का अनुपालन किया। प्रो.आर.वी. राजकुमार निदेशक ने राष्ट्र ध्वज फहराया। इस अवसर पर संस्थान की सुरक्षा कर्मियों ने निदेशक को सलामी दी। इस दौरान संस्थान छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया था। संस्थान के सभी संकाय सदस्यों एवं कर्मचारियों ने गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लिया। निदेशक ने अपने संबोधन में शिक्षा के महत्वपूर्ण बिंदुओं पर प्रकाश डाला और छात्रों को एक सफल उद्यमी बनने हेतु प्रेरित किया। अपने संबोधन के अंत में संस्थान निदेशक ने सभी उपस्थित संकाय एवं स्टाफ सदस्यों को संस्थान को समृद्धशील बनाने हेतु अपनी-अपनी भूमिकाओं पर प्रकाश डालने पर बल दिया।

नराकास की 58 वीं बैठक

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा संस्थान के निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (के.) का नया अध्यक्ष नियुक्त किया गया । उनकी अध्यक्षता में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति भुवनेश्वर (के.) की 58 वीं बैठक दिनांक 29.01.2016 को संस्थान प्रेक्षागृह में आयोजित की गई।

नराकास भुवनेश्वर की बैठकें इससे पूर्व प्रधान मुख्य आयुक्त की अध्यक्षता में आयोजित की जाती थी।

बैठक के प्रारंभ में सर्वप्रथम अतिथियों को स्वागत किया गया। नराकास भुवनेश्वर के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. राज कुमार सिंह ने नराकास की गतिविधियों के साथ इसके गठन के उद्देश्य और इसकी भूमिकाओं पर प्रकाश डाला। अपने संबोधन में उन्होंने केंद्र सरकार के कार्यालय प्रमुखों से अनुरोध किया कि हम आपसी सहयोग के माध्यम से नगर में राजभाषा नीतियों का कार्यान्वयन बढ़ाएं। तत्पश्चात अध्यक्ष, नराकास की अनुमति से बैठक की कार्यसूची पर बिंदुवार चर्चा प्रारंभ की गई। बैठक की कार्यसूची के अनुसार नराकास की वेबसाइट का निर्माण करने का निर्णय लिया गया। सदस्य-सचिव श्री नितिन जैन ने वेबसाइट के लेआउट के माध्यम से नराकास भुवनेश्वर (केंद्रीय) की आगामी वेबसाइट पर पठनीय सामग्रियों की जानकारी दी और सदस्यों से सुझाव प्राप्त किए। बैठक की कार्यसूची के अनुसार सदस्य कार्यालयों के अंशदान, वार्षिक कार्यक्रम, उप समितियों का गठन आदि विषयों पर भी चर्चा की गई।

नराकास के सदस्य कार्यालयों से प्राप्त छमाही रिपोर्ट के आधार पर सदस्य-सचिव ने कुछ महत्वपूर्ण सुझावों के साथ राजभाषा नियमों के अनुपालन हेतु सभी से अनुरोध किया।

प्रो. आर. वी. राज कुमार, अध्यक्ष, नराकास ने अपने संबोधन में कहा कि "नराकास एक आपसी समन्वयन का मंच है" जिसके माध्यम से हम एक दूसरों की सहायता कर पाएंगे। जब मुझे नराकास का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था उसी दिन मैंने सबसे पहले नराकास की वेबसाइट का निर्माण करने का निर्णय लिया था। नराकास की वेबसाइट के माध्यम से हम एक दूसरे के बीच अद्यतन जानकारियाँ सांझा कर सकेंगे और सूचनाओं का प्रेषण भी द्रुत गति से किया जा सकेगा। इसक साथ ही अपने संबोधन में उन्होंने सभी सदस्य कार्यालयों से अनुरोध किया कि वे सभी आपसी समन्वय स्थापित करे जिससे हम राजभाषा नीतियों का कार्यान्वयन सुचारू रूप से कर सकें। उन्होंने कहा कि हम वर्ष भर विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करते रहेंगे जिससे हम निरंतर एक दूसरे की सहायता कर सकें।

इस अवसर पर प्रो. बी. के. मिश्र, निदेशक, सीएसआईआर-आईआईएमटी ने अपने संबोधन में कहा कि यह बहुत आवश्यक है कि हम अपने संस्थान के साथ-साथ नगर में राजभाषा नीतियों का कार्यान्वयन सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि इसमें कार्यालयों प्रमुखों के उपस्थित होने से उन्हें राजभाषा नीतियों की सम्यक जानकारी भी प्राप्त होती है।

बैठक के अंत में सदस्य कार्यालयों से भी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण सुझाव प्राप्त हुए। जिसमें प्रधान लेखाकार के हिंदी अधिकारी श्री आर.एन. चाँद ने हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस बैठक में नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों ने अपने-अपने यहाँ राजभाषा नीतियों के कार्यावन्यन के अनुपालन दृष्टि से तैयार की गई सामग्रियों एवं पत्रिकाओं का वितरण किया।

आठवाँ स्थापना दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वनर ने दिनांक 12 फरवरी 2016 को अपना आठवाँ स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पट्टनायक ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर

माननीय कौशल विकास एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री संजय कुमार दास बर्मा, उच्च एवं विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के राज्य मंत्री श्री प्रदीप कुमार पाणिग्राही एवं माननीय सांसद प्रो. प्रसन्न कुमार पाटशाणी भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पट्टनायक एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने संबोधन में राज्य के मुख्यमंत्री को विशेष रूप से धन्यवाद देते हुए कहा कि श्री नवीन पट्टनायक ने भा.प्रौ.सं. की स्थापना के लिए अरगुल परिसर में भूमि आबंटित कर बहुत बड़ा योगदान दिया है। इसके साथ ही उन्होंने संस्थान की शैक्षणिक गतिविधियों को स्थाई परिसर में स्थानांतरण पर संतोष व्यक्ति किया और कहा कि यह राज्य सरकार के पूर्ण सहयोग के बिना यह संभव नहीं हो पाता। सरकार द्वारा नियमित रूप से की जा रही सहायता ने इस स्वप्न को पूरा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। निदेशक ने अपने संबोधन में राज्य प्रशासन द्वारा की गई सहायता के लिए आभार और प्रशंसा व्यक्ति की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि ने संस्थान द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और संस्थान द्वारा युवा मस्तिष्कों को नवप्रवर्तनों एवं उद्यमशीलता के लिए तैयार करने हेतु किए गए प्रयासों पर संतोष व्यक्त किया। उन्होंने अपने संबोधन में भारत को डिजीटल बनाने हेतु नई योजनाओं को प्रारंभ करने का आह्वाहन किया और भुवनेश्वर को भारत के स्मार्ट शहर बनाने हेतु सशक्त अपील की। इस अवसर पर उन्होंने संकाय सदस्यों को शिक्षण उत्कृष्ठता पुरस्कार एवं छात्रों को राष्ट्रीय स्तर पर उपलब्धि के लिए पुरस्कृत किया। डॉ. सत्यनारायण पाणिग्राही को छात्रों से प्राप्त प्रतिक्रिया के आधार संस्थान का सर्वश्रेष्ठ प्राध्यापक चुना गया। इसके साथ ही उन्होंने अपने अन्य विशिष्ट मंत्रियों के साथ पौधरोपण कार्यक्रम में भी भाग लिया।

इस अवसर पर उपस्थित माननीय कौशल विकास एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री संजय दास बर्मा ने अपने संबोधन में मुख्यमंत्री को भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की स्थापना के लिए खुर्दा एवं पुरी जिले के मुख्य स्थान के बीच 1000 एकड़ जमान आबंटित करने के लिए विशेष धन्यवाद दिया और कहा कि इस तरह के राष्ट्रीय महत्व के संस्थान स्थापित होने से राज्य प्रगति की दिशा में अपना कदम बढ़ाने में सुदृढ़ होता है।।

माननीय उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्री, श्री प्रदीप कुमार पाणिग्राही ने भी माननीय मुख्यमंत्री श्री नवीन पटट्नायक को राज्य में भा.प्रौ.सं. की स्वप्नदर्शी योजना तथा इसके लिए भूमि आबंटन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा मंत्रालय संस्थान के विकास के लिए हर संभव सहायता मुहैय्या कराता रहेगा।

माननीय सांसद प्रो. प्रसन्न कुमार पाटशाणी ने भी संबोधन में कहा कि भुवनेश्वर को स्मार्ट सिटी बनाने में हमारे मुख्यमंत्री जी का विशेष योगदान है।

इस अवसर सम्माननीय अतिथि के रूप में उपस्थित श्री ललित मानसिंह जी, पूर्व विदेश सचिव ने 8वाँ स्थापना दिवस व्याख्यान देने हेतु संस्थान के प्रति अपना आभार व्यक्त किया और राज्य के संस्थापक उत्कल गोरव मधुसूदन दास के आधुनिक ओडिशा के स्वप्न को पूरा करने में भूतपूर्व, मुख्यमंत्री श्री बीजू पट्टनायक के चार महत्वपूर्णों कार्यों पर बल दिया जिसमें हिरकुड बांध, राउरकेला इस्पात संयंत्र, पारादीप पोर्ट एवं नालको शामिल थे। इसके साथ ही उन्होंने भूतपूर्व मुख्यमंत्री के सुपुत्र श्री नवीन पट्टनायक द्वारा पारादीप पर विश्व स्तरीय पेट्रो कैमिकल उद्योग की स्थापना के योगदान पर अपने विचार रखें। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि माननीय वर्तमान मुख्यमंत्री ने उनके पाँचवें स्वप्न को पूरा करने में बहुमूल्य योगदान दिया है। उपर्युक्त सभी संस्थाओं/कार्यों ने राज्य के सर्वांगीण प्रौद्योगिकी विकास में योगदान दिया है और अब राष्ट्रीय महत्व का संस्थान भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर की स्थापना कर इस दिशा के विकास में एक नई पहल की है। कार्यक्रम का समापन प्रो.शुभाशीष त्रिपाठी, उप निदेशक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

शिक्षण उत्कृष्टता पुरस्कार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर ने 12 फरवरी 2016 को आयोजित आठवाँ स्थापना दिवस में शरद ऋतु सत्र 2015-16 के लिए शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए संकाय सदस्यों को शिक्षण उत्कृष्टता पुरस्कार से सम्मानीत किया है। पुरस्कार प्राप्त संकाय सदस्य में 1) डॉ. सत्यनारायण पाणिग्राही 2) डॉ. मिहिर कुमार पंडित, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ 3) डॉ. अमृता सत्पती, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान 4) डॉ. टी.वी.एस.शेखर, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ 5) डॉ. योगेश भुमकर, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ 6) प्रो.स्वरूप कुमार महापात्र, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ शामिल है।

शैक्षणिक गतिविधियाँ

1. प्रो. स्वरूप कुमार महापात्र, प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-06 जनवरी 2016 को नानयंग टेक्निकल यूनिवर्सिटी/नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर, सिंगापुर में आयोजित माइक्रो/नैनोस्कैल हीट एंड मास ट्रांसफर कॉन्फरेंस-2016 में "थर्मल वेब मॉडल फॉर एनालाइसिस ऑफ मल्टीलेअर टिस्यू मिडियम इन प्रिजेंस ऑफ होमोजेनिटी इन लेज़र टिस्यू" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

2. डॉ. मनोरंजन सत्पती, सह प्राध्यापक, विद्युत विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-08 जनवरी 2016 के दौरान 29 वाँ इंटरनेशनल कॉन्फरेंस ऑन वीएलएसआई डिजाइन में "टेस्टिंग एंड वेरिफिकेशन ऑफ एम्बेडेड ऑटोमोटिव सॉफ्टवेयर" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया और "टेक्नोलॉजिस फॉर सेफ एंड इंटेलिजेंट ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम्स" विषय पर सत्र को संबोधित किया।

3. प्रो.यू.सी.मोहांती, अभ्यागत प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 05-07 जनवरी 2016 के दौरान श्रीलंका में 8 वाँ इंटरनेशनल परेस्पेक्टिव ऑन वाटर रिसोर्सेस एंड द एन्वॉयरोमेंट कॉन्फरेंस में व्याख्यान प्रस्तुत किया।

4. डॉ. पार्थ प्रतिम दे, सहायक प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 10-14 जनवरी 2016 को वाशिंटन डीसी, यूएसए में आयोजित 95 वाँ ट्रांसपोर्टेशन रिसर्च बोर्ड की वार्षिक बैठक में "कैपासिटी ऑफ यू-टर्न मूवमेंट एट मिडियन ओपेनिंग्स" विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

5. प्रो. वी. आर. पेदिरेड्डी, प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 27-30 जनवरी 2016 के दौरान इंडियन एसोसिएशन फॉर कल्टीवेशन ऑफ साईंस, जादवपुर, कोलकाता में आयोजित " पॉलिमर-सॉल्वेंट कॉम्पलेक्सेस एंड इंटरकेलेट्स, पॉलीसॉल्वेट-11" पर

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में व्याख्यान प्रस्तुत किया।

6. डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 29-30 जनवरी 2016 के दौरान रिसर्च सेंटर इमारत, हैदराबाद, तेलांगना में आयोजित "एडवांस इन सेंसर : लैब फिल्ड" पर राष्ट्रीय सम्मेलन में "ऑप्टिकल फाइबर सेंसर्स फॉर डिफेंस एप्लिकेशन" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

7. डॉ. राज कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, पृथ्वी, महासागर एवं जलवायु विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 22-24 जनवरी, 2016 को मेलबर्न, आस्ट्रेलिया में आईओडीपी एक्सपिडिशन -346 के द्वितीय पोस्ट क्रुज बैठक में जापान सी एवं ईस्ट चाइना सी पर आधारित कार्य की प्रगति की।

8. प्रो. स्वरूप कुमार महापात्र, प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 11.01.2016 को कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग, अदुर, केरल में "कंप्यूटेशनल फ्लूड डायनामिक्स" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

9. डॉ. श्यामल चटर्जी, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 04-06 फरवरी 2016 के दौरान बर्दवान विश्वविद्याय में आयोजित " डिजाइन, सिंथेसिस, इंटरएक्शन, कैमिकल, बायो-कैमिकल एक्ट ऑफ डिफरेंट फंक्शनल मॉलिक्यूल्स" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में "इंटरएक्शन ऑफ इलेक्ट्रॉन्स एंड ऑयन्स विथ मॉलिक्यूल्स" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान प्रस्तुत किया।

10. डॉ. अखिलेश बर्वे, सहायक प्राध्यापक, यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 12-14 फरवरी 2016 के दौरान भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में आयोजित " इंटरनेशनल कॉन्फरेंस ऑन ई-बिजनेस एंड सप्लाई चेन कम्पिटिटिवनेस" में " एनालाइसिस ऑफ क्रिटिकल फैक्टर्स ऑफ ह्युमेनिटेरियन सप्लाई चेन्स इन मिटिगेटिंग द साइकलॉन रिस्क इन ओडिशा : ए टीआईएस अप्रोच विषय पर पेपर प्रस्तुत किया।

11. डॉ. तबरेज़ खान, सहायक प्राध्यापक, आधारीय विज्ञान विद्यापीठ ने दिनांक 18-21 फरवरी, 2016 के दौरान भा.प्रौ.सं. खड़गपुर में आयोजित 22 वां एनुअल मिटिंग ऑफ नेशनल मैग्नेटिक रेसोनेंस सोसायटी, इंडिया (एनएमआरएस-2016) में भाग लिया।

12. प्रो. ब्रिज कुमार ढिंडव, अभ्यागत प्राध्यापक, खनिज़, धातुकार्मिकी एवं पदार्थ विज्ञान ने दिनांक 22-26 फरवरी 2016 के दौरान शंघाई जियो टोंग विश्वविद्यालय, चीन में आयोजित "सॉलिडफिकेशन प्रोसेसिंग फंडामेंटल एंड करंट एप्लिकेशन इन इंडस्ट्री" द्विपक्षीय कार्यशाला में भाग लेने और भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर के खनिज़, धातुकार्मिकी, पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ और शंघाई जियो टोंग विश्वविद्यालय, चीन के बीच विचार-विमर्श करने हेतु यात्रा की।

13. डॉ. अनिमेष मंडल, सहायक प्राध्यापक, खनिज़, धातुकार्मिकी एवं पदार्थ विज्ञान ने दिनांक 22-26 फरवरी 2016 के दौरान शंघाई जियो टोंग विश्वविद्यालय, चीन में आयोजित "सॉलिडफिकेशन प्रोसेसिंग फंडामेंटल एंड करंट एप्लिकेशन इन इंडस्ट्री" द्विपक्षीय कार्यशाला में भाग लेने और भा.प्रौ.सं.भुवनेश्वर के खनिज़, धातुकार्मिकी, पदार्थ विज्ञान विद्यापीठ और शंघाई जियो टोंग विश्वविद्यालय, चीन के बीच विचार-विमर्श करने हेतु यात्रा की।

14. डॉ. हनुमंत राव बेनडाढी, सहायक प्राध्यापक, आधारिक संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 24-25 फरवरी 2016 के दौरान इंडो-जर्मन साईंस एंड टेक्नोलॉजी सेंटर (आईजीएसटीसी) द्वारा वित्तपोषित इंडो-जर्मन कार्यशाला में "मैजर्स ऑफ वॉल्युमेट्रिक स्ट्रेंस इन सॉयल्स यूजिंग लेज़र सेंसर्स" में रुहर-विश्वविद्यालय बोचुम, जर्मनी में व्याख्यान प्रस्तुत किया।

15. प्रो.वी. आर. पेदिरेड्डी, प्राध्यापक, आधारीय संरचना विद्यापीठ ने दिनांक 26.02.2016 को मैंगलूर विश्वविद्यालय द्वारा प्रो. बी.एस.होल्ला एंडोमेंट व्याख्यान में " मॉलिक्यूलर रिकॉगनिजिशन इन आर्गेनिक कैमेस्ट्री" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया।

पेटेंट लेखन पर कार्यशाला

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर की अभिकल्प नवप्रवर्तन केंद्र (डीआईसी) द्वारा 13-14 फरवरी 2016 के दौरान "पेटेंट लेखन" पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला (निष्णात एवं विद्यावाचस्पति तथा अवर स्नातक छात्रों) दो अलग-अलग बैचों में आयोजित की गई थी। इस कार्यशाला में श्री प्रशांत पतनकर, नोवो आईपी, पुणे के संस्थापक एवं मालिक को कार्यशाला के संचालन के लिए आमंत्रित किया गया था। श्री पतनकर की कंपनी ने बौद्धिक संपदा से संबंधित सभी सेवाएं प्रदान करती है। उनके फर्म के पास यांत्रिकी, औषधि विज्ञान, पॉलिमर,

जीव विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक्स, टेलिकॉम, आईटी, चिकित्सा उपकरण, कृषि, शक्ति क्षेत्र, वस्त्र एवं पदार्थ प्रौद्योगिकी सहित विविध तकनीकी क्षेत्रों में अनूठी विशेषता है। संस्थान के विभिन्न विद्यापीठों में से पचास छात्रों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इस कार्यशाला में छात्रों को बौद्धिक संपदा से संबंधित विभिन्न पहलुओं की जानकारी के साथ पेटेंट लिखने एवं फाइल करने पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया। प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र वितरित किए गए।

मातृभाषा दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 21.02.2016 को मातृभाषा दिवस का आयोजन किया गया। यह दिवस हमारे देश की भाषा संपन्नता एवं सांस्कृतिक विविधता एवं बहुभाषावाद के प्रति जागरूकता उत्पन्न करने के लिए आयोजित की गई थी। कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य, छात्र एवं स्टाफ सदस्यों ने भाग लिया। उत्कल विश्वविद्यालय के पी.जी. विभाग (अंग्रेजी) के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.एस.सी. सत्पती कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान वर्तमान समय में भाषा विविधता एवं मातृभाषा के महत्व पर प्रकाश डाला।

डॉ. मिता चिनारा कार्यक्रम की सम्मानीय अतिथि थी जिन्होंने मातृभाषा के सांस्कृतिक पक्ष पर प्रकाश डाला। उन्होंने कार्यक्रम के दौरान अपने समूह के साथ मिलकर हिंदी और ओडिया में मधुर गान प्रस्तुत किया। संस्थान के छात्रों, संकाय सदस्यों एवं स्टाफ सदस्यों ने अपनी-अपनी मातृभाषा (हिंदी, ओडिया, बंगाली, मलयालय इत्यादि) में गान प्रस्तुत किया और स्थानीय नृत्य प्रस्तुत किया।

संस्थान निदेशक प्रो.आर.वी. राज कुमार ने सभी कलाकारों को सम्मानित किया और अपने संबोधन में उन्होंने छात्रों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया और कहा कि भा.प्रौ.सं. भुवनेश्वर द्वारा छात्रों को प्रतिभाओं को निखारने के लिए इस तरह के कार्यक्रम निरंतर रूप से आयोजित किए जाए। कार्यक्रम का समापन प्रो.एस.के.महापात्र, संकायाध्यक्ष (छात्र कार्य) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

नई नियुक्तियाँ

1. डॉ. मीनू रामदास ने दिनांक 13.01.2016 को संस्थान के आधारिक संरचना विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
2. प्रो. बह्म देव ने दिनांक 25.01.2016 को संस्थान के खनिज़, धातुकार्मिकी एवं पदार्थ अभियांत्रिकी में अभ्यागत प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।
3. डॉ. शशिधर कोंडाराजू ने दिनांक 03.02.2016 को संस्थान के यांत्रिकी अभियांत्रिकी विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

4. डॉ. दिपांकर दे ने दिनांक 29.02.2016 को संस्थान के विद्युत विज्ञान विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

5. श्री संबित रंजन मोहांती ने दिनांक 03.03.2016 को संस्थान के वित्त एवं लेखा अनुभाग में कनिष्ठ अधीक्षक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

6. श्री अनिरुद्ध बाई ने दिनांक 03.03.2016 को संस्थान के अनुसंधान एवं विकास इकाई में कनिष्ठ अधीक्षक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

7. श्री अभिमण्यु महाल ने दिनांक 03.03.2016 को संस्थान के शैक्षणिक अनुभाग में कनिष्ठ अधीक्षक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

8. डॉ. वेणुगोपाल अरुमुरु ने दिनांक 08.03.2016 को संस्थान के यांत्रिकी विज्ञान विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

9. श्री बिश्वरंजन प्रधान ने दिनांक 10.03.2016 को संस्थान के अभियांत्रिकी प्रकोष्ठ में सहायक कार्यपालक अभियंता (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

10. डॉ. अनिर्बन भट्टाचार्य ने दिनांक 14.03.2016 को संस्थान के यांत्रिकी अभियांत्रिकी विद्यापीठ में सहायक प्राध्यापक (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

11. सुश्री स्वर्णलता स्वाईं ने दिनांक 21.03.2016 को संस्थान के चिकित्सा इकाई में स्टाफ नर्स (महिला) (संविदा पर) के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान भुवनेश्वर द्वारा दिनांक 28 फरवरी 2016 को नोबल पुरस्कार विजेता सर वेंकट रमन के रमन प्रभाव का स्मरण करते हुए राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन संस्थान को शोधार्थियों, एम.टके./एम.एससी एवं संकाय सदस्यों की उपस्थिति में किया गया।

कार्यक्रम का आयोजन संस्थान प्रेक्षागृह में किया गया। कार्यक्रम में संस्थान के शोधार्थियों ने पोस्टर प्रस्तुति की। पोस्टर प्रस्तुति का उद्घाटन संस्थान उप निदेशक प्रो.एस.त्रिपाठी द्वारा किया गया। पोस्टर प्रस्तुतिकरण के दौरान संस्थान के शोधार्थियों ने अपने शोध के विषयों में आगंतुकों को जानकारी दी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.पुलिन बी. नायक, प्राध्यापक एवं पूर्व निदेशक, दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स थे जिन्होंने "रिविजिटिंग इंडिया ग्रोथ" पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। पैनल विशेषज्ञों द्वारा सर्वश्रेष्ठ पोस्टर का चयन किया गया और उन्हें पुरस्कृत किया गया। पोस्टर प्रस्तुत करने वाले सभी शोधार्थियों को प्रमाणपत्र दिए गए।

कार्यक्रम का समापन प्रो.वी.आर.पेदिरेड्डी, संकायाध्यक्ष (सीईपी) के धन्यवाद ज्ञापन के साथ संपन्न हुआ।

साहित्य मंच

जैनेंद्र कुमार का जन्म 02 जनवरी सन 1905, में अलीगढ़ के कौड़ियागंज गांव में हुआ। उनके बचपन का नाम आनंदीलाल था। इनकी मुख्य देन उपन्यास तथा कहानी है। एक साहित्य विचारक के रूप में भी इनका स्थान मान्य है। इनके जन्म के दो वर्ष पश्चात इनके पिता की मृत्यु हो गई। इनकी माता एवं मामा ने ही इनका पालन-पोषण किया। इनके मामा ने हस्तिनापुर में एक गुरुकुल की स्थापना की थी। वहीं जैनेंद्र की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा हुई। सन 1912 में उन्होंने गुरुकुल छोड़ दिया। प्राइवेट रूप से मैट्रिक परीक्षा में बैठने की तैयारी के लिए वह बिजनौर आ गए। 1919 में उन्होंने यह परीक्षा बिजनौर से न देकर पंजाब से उत्तीर्ण की। जैनेंद्र की उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय में हुई। 1921 में उन्होंने विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़ दी और कांग्रेस के असहयोग आंदोलन में भाग लेने के उद्देश्य से दिल्ली आ गए। कुछ समय के लिए ये लाला लाजपत राय के 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' में भी रहे, परंतु अंत में उसे भी छोड़ दिया।

प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में जैनेंद्रकुमार (02 जनवरी, 1905– 24 दिसंबर, 1988) का विशिष्ट स्थान है। वह हिंदी उपन्यास के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य हैं। जैनेंद्र अपने पात्रों की सामान्यगति में सूक्ष्म संकेतों की निहिति की खोज करके उन्हें बड़े कौशल से प्रस्तुत करते हैं। उनके पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ इसी कारण से संयुक्त होकर उभरती हैं। जैनेंद्र के उपन्यासों में घटनाओं की संघटनात्मकता पर बहुत कम बल दिया गया है। चरित्रों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं के निर्देशक सूत्र ही मनोविज्ञान और दर्शन का आश्रय लेकर विकास को प्राप्त होते हैं।

जैनेन्द्र अपने पथ के अनूठे अन्वेषक थे। उन्होंने प्रेमचन्द के सामाजिक यथार्थ के मार्ग को नहीं अपनाया, जो अपने समय का राजमार्ग था। लेकिन वे प्रेमचन्द के विलोम नहीं थे, जैसा कि बहुत से समीक्षक सिद्ध करते रहे हैं; वे प्रेमचन्द के पूरक थे। प्रेमचन्द और जैनेन्द्र को साथ-साथ रखकर ही जीवन और इतिहास को उसकी समग्रता के साथ समझा जा सकता है। जैनेन्द्र का सबसे बड़ा योगदान हिन्दी गद्य के निर्माण में था। भाषा के स्तर पर जैनेन्द्र द्वारा की गई तोड़-फोड़ ने हिन्दी को तराशने का अभूतपूर्व काम किया। जैनेन्द्र का गद्य न होता तो अज्ञेय का गद्य संभव न होता। हिन्दी कहानी ने प्रयोगशीलता का पहला पाठ जैनेन्द्र से ही सीखा। जैनेन्द्र ने हिन्दी को एक पारदर्शी भाषा और भंगिमा दी, एक नया तेवर दिया, एक नया `सिंटेक्स' दिया। आज के हिन्दी गद्य पर जैनेन्द्र की अमिट छाप है।-

सन 1921 से 23 के बीच जैनेंद्र ने अपनी माता की सहायता से व्यापार शुरु किया, जिसमें इन्हें सफलता भी मिली। परंतु सन 1923 में वे नागपुर चले गए और वहाँ राजनीतिक पत्रों में संवाददाता के रूप में कार्य करने लगे। उसी वर्ष इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और तीन माह के बाद छूट गए। दिल्ली लौटने पर इन्होंने व्यापार से अपने को अलग कर लिया। जीविका की खोज़ में ये कलकत्ते भी गए, परंतु वहाँ से भी इन्हें निराश होकर लौटना पड़ा। इसके बाद इन्होंने लेखन कार्य आरंभ किया। २४ दिसम्बर 1988 को उनका निधन हो गया।

उपन्यासः 'परख' (1921), 'सुनीता' (1935), 'त्यागपत्र' (1937), 'कल्याणी' (1939), 'विवर्त' (1953), 'सुखदा' (1953), 'व्यतीत' (1953) तथा 'जयवर्धन' (1956)।

कहानी संग्रहः 'फाँसी' (1921), 'वातायन' (1930), 'नीलम देश की राजकन्या' (1933), 'एक रात' (1934), 'दो चिड़ियाँ' (1935), 'पाजेब' (1942), 'जयसंधि' (1941) तथा 'जैनेंद्र की कहानियाँ' (सात भाग)।

निबंध संग्रहः 'प्रस्तुत प्रश्न' (1936), 'जड़ की बात' (1945), 'पूर्वोदय' (1949), 'साहित्य का श्रेय और प्रेय' (1953), 'मंथन' (1953), 'सोच विचार' (1953), 'काम, प्रेम और परिवार' (1953), तथा 'ये और वे' (1954)।

इंटरनेट से साभार

मार्गदर्शक : डॉ. राज कुमार सिंह (प्राध्यापक प्रभारी, राजभाषा)

सलाहकार : डॉ. अखिलेश कुमार सिंह, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस एवं डॉ. राजन झा, सहायक प्राध्यापक, एसबीएस

संपादक : श्री नितिन जैन, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक